साझा इतिहास:
हिंदुस्तान और अरब

'साझा इतिहास: हिंदुस्तान और अरब' ऐसे दो इलाक़ों की कलात्मक और बौद्धिक यात्राओं की पड़ताल करती है जिनकी आधुनिकताएँ सांस्कृतिक स्वायत्तता और आत्म-परिभाषा की साझा आकांक्षाओं से विकसित हुईं। बरजील आर्ट फ़ाउंडेशन, शारजाह और जहांगीर निकोलसन आर्ट फ़ाउंडेशन, मुम्बई के संग्रहों से ली गई कलाकृतियों की ये प्रदर्शनी देखने वालों को यह सोचने का न्यौता देती हैं कि समानांतर ऐतिहासिक अनुभवों और रचनात्मक लेन-देन के ज़रिए बने गहरे जुड़ाव किस तरह कला के माध्यम से ज़ाहिर होते हैं।

इस प्रदर्शनी में भारत, बहरीन, मिश्र, इराक़, कुवैत, लेबनान, पलेस्टाइन, सीरिया, ट्यूनीशिया, और संयुक्त अरब अमीरात की विविध आवाज़ें साथ आई हैं। बीसवीं सदी और उसके बाद बनाए गए चित्रों, प्रतिमाओं, प्रिंटों, सेरेमिक और कपड़े और काग़ज़ पर बनी कलाकृतियों के ज़रिए यह प्रदर्शनी अस्मिता, आधुनिकता और रिश्तों से जुड़े सवालों के इर्दगिर्द बुनी कलात्मक रवायतों को उभारती है।

क़िस्म-क़िस्म के धागे इन इलाक़ों को आपस में बाँधे हुए हैं: साझा औपनिवेशिक इतिहास और आज़ादी के संघर्ष; गुट-निरपेक्ष आंदोलन की वैश्विक ताक़त की रेडिकल पुनर्कल्पना; और इन भूभागों के बीच लोगों की लगातार आवाजाही। भारत और अरब के देशों को अलग-अलग दायरों की तरह प्रस्तुत करने की बजाय 'साझा इतिहास' में उनके आपसी संवादों को उभारा गया है – सहभागिता के वे दौर जिनका दोनों जगहों की आधुनिक कला पर असर पड़ा। प्रदर्शनी में कला के मौलिक प्रयोगों की विविधता को सामने रखा गया है जिनसे रूप, दर्शन और सांस्कृतिक कल्पना के मेलजोल का खुलासा होता है। इसमें शामिल अधिकतर कलाकार दिल्ली में १९६० के दशक से आयोजित होने वाले इंडिया ट्रिनाले में भी शामिल होते रहे हैं। बाक़ी कलाकारों का प्रशिक्षण भी उन्हीं कला विद्यालयों में हुआ और वे अपने नए आज़ाद हुए मुल्कों में अपनी ख़ास विज़ुअल भाषा के साथ कला के साझा अंतरराष्ट्रीय विमर्श में शामिल हुए। अनेक कलाकृतियों में मुक्ति के आंदोलनों और सामाजिक बदलावों की दास्तान दर्ज की गई है, अक्सर स्थानीय परम्पराओं और आधुनिक रूपों को मिला-जुलाकर।

बुनियादी तौर पर यह प्रदर्शनी कलात्मक लेन-देन के प्रवाह का जश्न है: ख़यालात, तस्वीरें और भंगिमाओं की सरहदों और समय के पार जाने की क़ाबिलियत का जश्न। एक तरह से यह अंजाम भी है और आग़ाज़ भी। यह एक आमंत्रण है अपने साझा तारीख़ों पर फिरसे नज़र डालने का, जो आज भी खोजबीन और एकजुटता की प्रेरणा देती हैं। यह प्रदर्शनी इस बात का पुख़्ता सबूत है कि आधुनिक कला की कहानी कोई एकल आख्यान नहीं है, बल्कि वह तमाम आवाज़ों का जाल है जो देश और काल के परे एक-दूसरे को आकार देती हैं।

क्यूरेटर: सुहेला ताकेश और पूजा वैश